Vol 6 Issue 8 May 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

नीतिवाक्यामृत ग्रन्थ में सप्तांग विचार

Manisha Shyam Kulkarni
Ph.D Student of Tilak Maharashtra Vidyapith , Pune.

प्रस्तावना :
राष्ट्र के लिए सप्तांग–विचार किया है। स्वामि, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश, बल, मित्र ये हैं।

स्वामि – धर्म–परायण, कुल, चारित्र्य, शुद्ध प्रतापि, नीति–परायण, व्यवहारी, अक्रोध करने–वाला, आत्मनिर्भर, स्वाधीन, ऐश्वर्य सम्पन्न, राजा सब को तारता है। धनद राजा सब को प्रिय है। महान् बुद्धिवाला, असाधारण, कठोर भावना वाला एवं स्पृहाहीन, उपकारी किसी का अपकार नहीं करता। सदा प्रसन्न, विपत्तियों में सहायक, गुणवान, त्यागी, वीर, शिर्घ कार्यकारी, कुशल कर्मी, अन्याय न करने वाला, विश्वसनीय, सत्य, अल्प भाषी होता है। घूस लेने वाला न हो। राजा काल विशेष का निर्माता – कारण होता है। राजा यह प्रजा का रक्षक है। मूल धन का रक्षण, राजा करता है। आसमुद्र पृथ्वि पर्यन्त, यह राजा का अपना परिवार है। राजा ने आगन्तुक, अपरिचित, असहनशील के साथ परिहास आदि न करे। उच्च आसन न लें। राजा मनुष्य का दास नहीं पर धन का हैं। राजायह विद्यावान है। राजा यह कामधेनू समान परोपकारी है। राजा को लोकव्यवहार ज्ञाता समझना चाहिए। यही है राजा।

अमात्य – चार अंगो – पैदल, घोडे, हाथी, रथ का योजक यह अमात्य है। अपने कार्मों की सफलता, विफलता तथा दान और मान के द्वारा राजा के साथ जिनका ऐश्वर्य और अनैश्वर्य हो, वे अमात्य होते हैं। आय, व्यय, स्वामि राजा की रक्षा और शान का पोषण, मन्त्रियों के अधिकार, कर्म क्षेत्र है। आय, व्यय रूपी राज्य के मुखों, कार्यो से मुनि का कमण्डलु आदर्श उदाहरण है। 'आय' सम्पत्ति आदि का उत्पत्तिस्थल है। स्वामी राजा के आदेश के अनुसार धन को लगाना 'व्यय' है। शासन का व्यय/गल हाथी, घोडे, रथ और पैदल रूप चार अंगों वाली सेना होती है। तेजस्वभावी, अपवित्र, जन्म कुल वाले, शक्तिशाली दल वाले, न सुधारे जा सकने वाले, बहुत खर्च करने वाले, अल्प आय वाले, दुसरे देश से आए हुए और बहुत अधिक मृदु लोभी व्यक्ति को मन्त्रि न बनाए। थोडी आय वाला और अतिव्यय राजा के धन को खा जाता है। थोडी आय के स्त्रोतों वाला मन्त्रि वणिक्जनों, अभिजनों और परिवार के जनों को सताता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय या अपने सम्बन्धी को राज्य पदोंपर अधिकारी न बनाए। सम्बन्धी को राज्य पदोंपर अधिकारी न बनाए। सम्बन्ध तीन प्रकार है – परम्पराज मुख से, प्रतिज्ञात, मानी से उत्पन्न या योनिज घमण्डी। 'सम्पन्नता' अधिकारियों के मनों को विकृत करती है। आत्मसात कर लेना, उपेक्षा करना, बुद्धि से रहित होना, बाधा डालना, द्रव्य को अन्य द्रव्य बदलना। – यें मन्त्रियों के दोष अस्थायी नियुक्ति न करना। करादिजन्य धन को इकट्ठा करनेवाला, लेखारक्षक कोष च सम्पत्ति का रक्षक विशुद्ध आय का ग्रहीता और इन राज–कर्मचारियों का अधिकारी – ये राज्यतंत्र हैं। आय और व्यय के द्वारा शोधा हुआ धन और वस्तुएँ आदि – 'नीवी' कहलाती है। नियमित जांच, कर्तव्यकर्मों में परिवर्तन, पूर्ण उत्तर दायित्व सौंपना, कर्मैचारियों से राज्यकार्य कराने की रीतियाँ है। कर्मचारियों में बार–बार नए नए कामों में नियुक्ति राजाओं के लिए धन देने वाली धारा नही हैं। बुद्धि पुरूषार्थ के द्वारा पहले संचित धन का बढ़ाने वाला, धन और सम्मान को प्राप्त कर सकते है। जो जिस कर्म में प्रवीण है, उस को वहाँ लगाए। अकस्मात आया हुआ धन को मूल धन के रूप में ही स्वीकार किया जाए। कर्मचारियों की सम्पत्ति राजओं की दूसरी निधि है। अमात्य ऐसा होना चाहिए। और मंत्री भी।

जनपद – जहाँ पशुओं, अन्नों और धातुओं, सुवर्णा की सम्पत्ति शोभायमान होती है। वह 'राज्य' या 'राष्ट्र' है। देश यह स्वामि को अधिकार, शासन और कोष वृद्धि देने वाला प्रदेश यह 'देश' है। जो अनेक प्रकार की वस्तुओं को देकर स्वामि के घर में हाथी और घोडों को धारण करता है, बांधता है, वह 'विषय' कहलाता है। जो प्रदेश वर्णा और आश्रमों से लक्षित प्रजा का अथवा धनधान्यादि पदार्थों की उत्पत्ति स्थान हो वह 'जनपद' कहलाता है। जो प्रदेश अपनी समृद्धि से राजा को समस्त विपत्तियों से निकालता है, पूर्णतया पुत्र देता है, वह 'निगाम' है। देश के गुण है कि वहाँ सब परस्पर रक्षा करने

वाले हो, खानों और आकरों में निहित खनिजों और सुवर्ण आदि धातुओं की सम्पत्ति, पर्बत और वन हो, गांव न बहुत बढ़े हुए विकसित न बहुत अल्प विस्तार, विकास वालें हो। विषैले घास और पानी वाली, ऊपर पत्थरों, कांटो, पहाडियों, गढ़ो और गुफाओं से व्याप्त भूमि, पुष्कल वर्षा पर जीवन होना, सर्प, लालची (भील आदि) और म्लेच्छों की बहुलता, अत्यल्प खेती होना और वृक्षों में फलों का अभाव – ये देश के दोष है। समस्त बाधाएँ प्रजाओं के धन को क्षीण करती हैं। कालोचित कर्तव्य कर्मों की उपेक्षा, सीमाओं का उल्लंघन फलदायक भूमि को भी जंगल बना देती है। धन– सम्पत्ति एवं भूभाग आदि राजाओं के लिए कामधेनु के समान है। विशाल गौओं, पशुओं के समुह एवं सुवर्ण की आय से युक्त कर आदि राजा के कोश को बढ़ाने वाले होते हैं। राजा को विद्वान एवं ब्राहमण को दान देना – यह सुखद है। इससे समस्त जनों की शुद्धि का और कोई उत्तम उपाय नहीं है।

दुर्ग – जिस पर आक्रमण करने से शत्रु दुःख प्राप्त करते है, उसे दुर्ग (कहते) हैं। अथवा जो दृष्टों के प्रभासों से उत्पन्न जिस कोह विजयशील राजा की आपत्तियों को दूर करता है, उसे दुर्ग कहते है। वह दो प्रकार का है – स्वाभाविक और मानव – निर्मित। भूमि, पर्याप्त – विस्तृत स्थानों के लिए घास, इन्धन और जल की प्रचुरता, शत्रुओं के लिए उन का अभाव, प्रचुर, अन्न और द्रव पदार्थो का संग्रह, आगमन और निर्गमन के द्वारा तथा रक्षा के लिए वीर पुरूष – ये दुर्ग के गुण है। दुर्गहीन राजा का बाहय आक्रमणादि विपत्ति में समुद्र के बीच जहाज से बिछुडें हुए पक्षी के समान कोई आश्रय नहीं होता है। दुर्ग में प्रवेश, भेद, चिरकाल तक घेरा डालना, आक्रमण शत्रु दुर्ग के अधिकारियों को प्रचुर सम्पत्ति और मान देकर वश में करता और विष आदि द्वारा वध करने वाले पुरूषों का प्रयोग ये किलों को प्राप्त करने के उपाय हैं।

कोश – जो विपत्ति और समृद्धि काल में राजा के शासन, चतुरंग सेना की वृद्धि को चमकाता है, सुसंगठित करता है, वह 'कोष' है। कोश के गुण, विशेषताएँ ये है किवह पुष्कल रत्नों, सोना और चांदीसे युक्त हो, सिक्को मुद्राओं से सुसज्ज हो। घोर विपत्ति में विशेष खर्च को सहन कर सकने वाला हो। कोष को नियमित रूप से बढ़ाता हुआ (कोश में) आए हुए धन को राजकार्य और शासन आदि में लगाए। कोश ही राजाओं का जीवन है, प्राण मात्र नहीं है। कोश नष्ट होने से राष्ट्र भी निर्धन, प्रजा से शून्य हो जाता है। कोश ही राजा कहलाता है, न राजाओं का पार्थिव शरीर। जिस के साथ हाथ मे धन है, वही विजयी–सफल होता हैं। धन रहित जन को पत्नी भी त्यागती है। उच्च कुल और उत्तम आचार–व्यवहार से पुरूष निश्चय से दूसरों के द्वारा सेवन योग्य नही बनता, किन्तु धन से ही सेवनीय होता हौ, जिस के पास प्रभूत धन है, वह निश्चय ही बड़ा और उच्च कुल वाला है। मंदिरो, धनाढय, विधवा, सेवक गणिकाओं के संघों से, पाखण्डियों से अक्षीण सम्पत्ति से, दोषी, व्यक्तिओं से, कर लेने से राजा का क्षीण कोश बढ़ता है।

बल – जो धन देने और मधुर भाषण, समाचार से तथा शत्रुओं के निवारण द्वारा राजा को सभी अवस्थाओं में सशक्त बनाए रखता है – विपत्तियों से बचाता रहता है, वह सेना या बल कहते है। सेनाओं में हाथी प्रमुख है। अकेला हाथी हजारों से यद्ध करता है, और हजारों चोटों से भी खिन्न और नष्ट नहीं होता है। हाथियों की जाति, कुल, वन और चाल ही महत्त्व पूर्ण नहीं है, प्रत्युत समर्थ शरीर, शक्ति, वीरता और शिक्षा भी महत्त्वपूर्ण हैं। युद्ध विद्या में अशिक्षित हाथी राजाओं के केवल प्राण और धन के नाशक होते है। घोडों की सेना, सेनाको भंग करना – ये एक मात्र घोडों के द्वारा ही सम्पन्न किए जा सकते है। अगर युद्ध भूमि समतल हो और प्रहार करने वाले योद्धा, धुनर्विद्या में प्रवीण, ज्ञाता और रथारोही हो, तो राजा की जीत अटल हैं। मैत्रीभाव, क्षत्रिय–बहुलता, अस्त्र–विद्या का ज्ञान, शूरता, स्वामी में अनुराग – ये सेना के गुण है। पारम्पारिक मूल सेना के अविरूद्ध अन्य सेना को धन और सम्मान आदि से अनुग्रहीत करें। अपने आप देखभाल न करना, दातव्य धन में से कुछ भाग ले लेना, उचित समय निकाल देना, विपत्ति का उपाय न करना, और विशेष अवसरों पर सम्मान न करना – ये सेना की विरक्ति के कारण होते है। यह बल–विचार हैं।

मित्र – जो सम्पन्न काल के समान आपत्तिकाल में भी स्नेह करता है, सह मित्र होता है। जो कारण के बिना ही बचाया जाए अथवा बचाए, वही सच्चा, पक्का मित्र है। जहाँ पूर्वजों की परम्परा से प्रशंसनीय सम्बन्ध चला आ रहा हो, वह सहज–स्वाभाविक मित्र होता है। जो वेतन और प्राणों की रक्षा के निमित्त आश्रित रहता हो, वह 'बनावटी' मित्र होता है। विपत्ति में साथ रहना, मित्र के धन के प्रति अनीच्छा, स्त्रियों में परम पवित्रता, क्रोध और प्रसन्नता के अवसरों पर ईर्ष्याहीन होता – ये मित्र के गुण है। स्नेही, इष्टासिद्धि, आपत्तिकाल में उपेक्षा करना, शत्रुओं की मदद करना, छल–कपटि और झूठी नम्रता ये मित्र के दोष है। मित्र की स्त्रियों से संसर्स करना, बार–बार माँगना आवश्यकता पर धन न देना, धन का व्यवहार, पीठ पीछे मित्र के दोष सुनना, ईर्ष्या और चुगली करना – ये मित्रता के टूटने के कारण है। गुप्तचर, दूर भी मित्र या सुहृद हो सकते है।

उपसंहार – सोमदेवजी ने राष्ट्र को महत्वपूर्ण अंग मानते हुए राज्य के सम्पूर्ण अंगों का उद्भव राष्ट्र से ही हुआ है। राजाने धर्माधर्म को जानकर सज्जनों के प्रति स्नेह प्रदर्शित करे। राजा न्यायपूर्वक आचरण करेगा, तो प्रजा भी धर्म, अर्थ एवं काम की प्राप्ति करेंगे। अथवा विपरीत आचरण से इनका नाश हो जाता है।

हमारे प्रिय प्रधानमन्त्रिजी का भी इस ग्रंथ के वर्णित जैसा आचरण है।

संदर्भ–सूचि

प्रमुख

1)सोमदेवसूरि, नीतिवाक्यामृत, प्रकाशक – मा. दि. जैन ग्रन्थमाला समिती, विक्रम : 1979
2)सोमदेवसूरि, अनुवादक डॉ. सुधीर गुप्ता, प्रकाशक – प्राकृत भारति, जयपुर, मोदी फाउण्डेशन, कलकत्ता, प्रथम आवृत्ति 1987.
3)ज्वालाप्रसादजी मिश्र भाष्य, कामन्दकीय नीतिसार, प्रकाशक – खेमराज श्रीकृष्णदास, 'श्रीवेड़कटेश्वर स्टीम्–प्रेस बम्बई, वि.स. 2009.
4)वामन पण्डित, (ल.गो. विंझे), शतकत्रयी, भर्तुहरीकृत, प्रकाशक – शुभदा – सारस्वत पब्लिकेशन्स प्रा. लि. पाटील इस्टेट, पुणे , द्वितीय आवृत्ति 1986.

अन्य

5)नीतिसार अंक, कल्याण मासिक, प्रकाशक – गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम आवृत्ति 2001
6)री.कु. व्यास, जैन ग्रन्थों में राजधर्म, प्रकाशक – प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, प्रथम आवृत्ति 2013.

Manisha Shyam Kulkarni
Ph.D Student of Tilak Maharashtra Vidyapith , Pune.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org